# भगवान् परशुराम के कुछ अर्चा-विग्रहों के दर्शन

**श्रीमती अंजना शर्मा**
प्रबन्धक
देव स्थान विभाग, जयपुर

भगवान् परशुराम श्रीविष्णु के आवेशावतार हैं। ये ऋचीक के पौत्र और जमदग्नि के पुत्र हैं। इनकी माता का नाम रेणुका था। हविष्य के प्रभाव से ब्राह्मण-पुत्र होते हुए भी ये क्षात्रकर्मा हो गये थे। ये भगवान् शंकर के परमभक्त हैं, उन्होंने परशुरामजी को एक अमोघ अस्त्र - परशु प्रदान किया। इनका वास्तविक नाम राम था, किंतु हाथ में परशु धारण करने से ये परशुराम नाम से विख्यात हुए। ये अपने पिता के अनन्य भक्त थे, पिता की आज्ञा से इन्होंने अपनी माता का सिर काट डाला था, पुनः पिता के आशीर्वाद से माता की स्थिति यथावत् हो गयी।

इनके पिता श्रीजमदग्निजी के आश्रम में एक कामधेनु गौ थी, जिसके अलौकिक ऐश्वर्य-शक्ति को देखकर कार्तवीर्यार्जुन उसे प्राप्त करने के लिये दुराग्रह करने लगा था। अन्त में उसने गो-ग्रहण में बल का प्रयोग किया और उसे माहिष्मती ले आया। किंतु जब परशुरामजी को यह बात विदित हुई तो उन्होंने कार्तवीर्यार्जुन तथा उसकी सारी सेना का विनाश कर डाला। किंतु पिता जमदग्नि ने परशुरामजी के इस चक्रवर्ती सम्राट्के वध को ब्रह्महत्या के समान बताते हुए उन्हें तीर्थ-सेवन की आज्ञा दी। वे तीर्थ-यात्रा में चले गये, वापस आने पर पिता-माता ने उन्हें आशीर्वाद दिया। सहस्त्रार्जुन के वध से उसके पुत्रों के मन में प्रतिशोध की आग जल रही थी। एक दिन अवसर पाकर उन्होंने छद्मवेष में आश्रम में आकर जमदग्निका सिर काट डाला और उसे लेकर भाग निकले। जब परशुरामजी को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वे अत्यन्त क्रोधावेश में आगबबूला हो उठे और पृथ्वी को क्षत्रिय-हीन कर देने की प्रतिज्ञा कर ली तथा इक्कीस बार घूम-घूमकर पृथ्वी को निःक्षत्रिय कर दिया। फिर पिता के सिर को धड़ से जोड़कर समन्तपञ्चकतीर्थ (कुरुक्षेत्र) में अन्त्येष्टि संस्कार किया। पितृगणों ने इन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हींकी आज्ञा से इन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी प्रजापति कश्यपजी को दान में दे दी और वीतराग होकर महेन्द्राचलपर तपस्या करने चले गये।

सीता स्वयंवर में श्रीराम द्वारा शिव-धनुष-भङ्ग किये जाने पर ये महेन्द्राचल से शीघ्रतापूर्वक जनकपुर पहुँचे, किंतु इनका तेज प्रविष्ट हो गया और ये अपना वैष्णव-धनु उन्हें देकर पुनः तपस्या के लिये महेन्द्राचलपर वापस लौट गये।

श्रीराम में भगवान् परशुराम चिरजीवी हैं। ये अपने साधकों-उपासकों तथा अधिकारी महापुरुषों को दर्शन देते हैं। इनकी साधना-उपासना से भक्तों का कल्याण होता है। देश में अनेक स्थानों पर भगवान् जमदग्निजी के तपस्या-स्थल

एवं आश्रम हैं, माता रेणुकाजी के अनेक क्षेत्र हैं, प्रायः रेणुका माता के मन्दिर में अथवा स्वतन्त्ररूप से परशुरामजी के अनेक मन्दिर भारतभर में हैं, जहाँ उनकी शान्त, मनोरम तथा उग्ररूप मूर्ति के दर्शन होते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार है-

१- महेन्द्रगिरि या महेन्द्राचल भगवान् परशुरामजी के प्रधान स्थान के रूप में प्रसिद्ध है। भारतवर्ष में दो महेन्द्रगिरि माने जाते हैं। एक पूर्वी घाट पर तथा दूसरा पश्चिमी घाट पर। वाल्मीकि रामायण का महेन्द्रगिरि पश्चिमी घाटपर है, जहाँ से हनुमान् जी कूदकर लंका में गये थे। दूसरा महेन्द्रगिरि, जो पुराणों में वर्णित है, पूर्वी घाट के उत्तर में है और उड़ीसा के मध्यभागतक फैला हुआ है। पुराणों के अनुसार यह परशुरामजी का निवास-स्थान बताया गया है। इस पर्वतपर स्थित परशुराम-तीर्थ में स्नान करने से अश्वमेधयज्ञ का फल मिलता है। इस पर्वत के पूर्वी ढाल पर युधिष्ठिर का बनवाया हुआ मन्दिर बड़ा ही आकर्षक है। इससे थोड़ी दूर पूर्व में ही पाण्डवों की माता कुन्ती का मन्दिर है। महेन्द्राचल की भारत के सात कुलपर्वतों - महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षवान्, विन्ध्य तथा पारियात्र में गणना है।

२- शिमला से मोटर-बस द्वारा नाहन और वहाँ से उसी प्रकार ददाहू जाकर वहाँ से गिरि नदी को पार करने पर समीप ही रेणुका-तीर्थ मिलता है। वहीं पर भगवान् परशुरामजी का एक मन्दिर तथा उन्हीं के नाम से एक तालाब भी है। मन्दिर में भगवान् परशुरामजी की एक प्राचीन मूर्ति है।

३- शिमला से ९० मील दूर बुशहर नामक एक स्थान है। वहाँ से सतलज नदी के उस पार ७ मील दूरी पर नृमुंड नामक स्थान में अम्बिकादेवी का एक मन्दिर है। भगवान् परशुरामजी ने यहाँ तपस्या की थी और देवी की स्थापना की थी। यहाँ परशुरामजी ने यज्ञ किया और बहुत-से ब्राह्मणों को बसाया। नृमुंड में एक गुफा है, उसी में श्रीपरशुरामजी की एक रजतमूर्ति है। गुफा के सम्मुख मन्दिर बना हुआ है। यहाँ परशुराम- मूर्ति को 'कालकाम परशुराम' कहते हैं। मन्दिर के चारों ओर प्राकार है। मन्दिर के द्वार के पास भैरवजी का मन्दिर है।

४- काम्पिल (फर्रुखाबाद जिले) में कपिल मुनि की कुटी है और उससे नीचे उतरकर द्रौपदीकुण्ड है। इसी के समीप भगवान् परशुरामजी का एक प्राचीन मन्दिर है।

५- आगरा से मथुरा जाने वाली सड़कपर १० मील दूर 'रुनकता' ग्राम है। इसे रेणुका क्षेत्र कहा जाता है। यहाँ एक ऊँचे टीले के पास परशुरामजी का मन्दिर है।

६- दक्षिण में रत्नागिरि जिले के चिपलूण ग्राम से दो मील दूर गोवलकोट नामक एक स्थान है। यह परशुराम-क्षेत्र कहलाता है। यहाँ पहाड़ी के ऊपर समतल स्थान है। यहीं पर परशुरामजी का भव्य मन्दिर है। मुख्य मन्दिर मे भार्गवराम, परशुराम तथा कालाराम - इन तीन नामो से ख्यात परशुरामजी- की तीन मूर्तियाँ हैं। यहाँ वैशाख की अक्षय तृतीया को परशुराम- जयन्ती का बड़ा समारोह होता है। इस मन्दिर के मार्ग में माता रेणुका का एक छोटा मन्दिर है। पहाड़ी पर आगे शिखर पर दत्तात्रेय का एक छोटा मन्दिर है।

७- दक्षिण में मनमाड से कुछ दूर चाँदवड के पास रेणुका तीर्थ नामक सरोवर है। उसके समीप ही रेणुकादेवी का मन्दिर है। कहा जाता है कि परशुरामजी की माता रेणुकाजी ने यहाँ तप किया था।

८- बंगलौर-पूना लाइन पर धारवाड़ स्टेशन से कुछ दूर परशुरामजी का एक प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है कि यहाँ महर्षि जमदग्नि का आश्रम था। पर्वत-शिखर पर परशुरामजी की माता रेणुकाजी का तपस्या-स्थल है। यहाँ दोनों नवरात्रों में विशेष समारोह के साथ अर्चा-महोत्सव होता है।

# श्री नन्दकिशोर शर्मा नैयायिक

**जयप्रकाश शर्मा**
पाण्डुलिपि विशेषज्ञ
वैदिक हैरिटेज एवं पाण्डुलिपि शोध संस्थान, जयपुर

श्री नैयायिक जी के पितृचरण श्री कल्याणबख्श जी शर्मा जयपुर के निवासी थे तथा विद्वत्समाज में दुर्गापाठी ब्राह्मण के रूप में विख्यात थे। श्री नैयायिक जी का जन्म वैशाख शुक्ला १० विक्रम संवत् १९५० तदनुसार १४ मई, १८९४ को जयपुर में हुआ था। आपकी शिक्षा जयपुर में ही सम्पन्न हुई। आपने पण्डित कन्हैयालाल जी न्यायाचार्य की सेवा में रहकर न्याय विषय से शास्त्री परीक्षा संवत् १९७३ में तथा न्यायाचार्य संवत् १९७६ में उत्तीर्ण की। आपने १६ दिसम्बर १९२० से असिस्टेन्ट प्रोफेसर न्याय के पद पर कार्य करना प्रारम्भ किया। दिनांक १ अप्रेल १९४३ को आप न्यायशास्त्र के प्राध्यापक पद पर पदोन्नत हुए।आपके शिष्यों में श्री स्वरूपनारायण शास्त्री दाधीच, श्री हरिकृष्ण शर्मा गोस्वामी, श्री रूपनारायण शर्मा न्यायाचार्य, श्री गोविन्दनारायण शर्मा न्यायाचार्य, श्री कृष्णदत्त शर्मा न्यायाचार्य, श्री दीनानाथ त्रिवेदी धादि के नाम उरलेखनीय हैं।आप मोदमन्दिर धर्मसभा के सम्मानित सदस्य रहे हैं और अन्तिम समय तक इस पद पर कार्य करते रहे है। आपका निधन मार्गशीर्ष शुक्ला १३ विक्रमाब्द २०२३ को जयपुर में ही हुआ। आपके निधन से न्याय शास्त्र को अपूरणीय क्षति हुई। आप सरल एवं गम्भीर प्रकृति के विद्वान थे। आपका रचनात्मक कार्य अनुपलब्ध है।